योगेन्द्र नाथ शर्मा ''अरुण''

नदिया से पूछा था मैंने

नदिया से पूछा था मैंने, क्यों उदास तुम रहती हो?
पहले तो थी भरपूर मगर, अब हौले-हौले बहती हो!!

कहां गया सौंदर्य तुम्हारा,
खो गई कहां वो तेज रवानी?
कल-कल की वो गूंज कहां है,
गई कहां मदमस्त जवानी?

हरे भरे थे कूल तुम्हारे, अब गुमसुम बहती रहती हो!
नदिया से पूछा था मैंने, क्यों उदास तुम रहती हो?

मुझे खा गया स्वार्थ तुम्हारा,
नदिया से नाला कर डाला!
अपने घर को साफ कर लिया,
कूड़ा-करकट सब मुझ में डाला!!

करके प्रदूषित पूछ रहे हो, क्यों उदास तुम रहती हो?
पूछो मुझ से, मानव! पूछो, कैसे पाप हमारे सहती हो!!

जागो मानव! खुद भी जागो,
सारे जग को आज जगा दो!
जीवन अगर बचाना है कल,
नदियों को तुम स्वच्छ बना दो!!

तब मुझसे तुम आकर पूछो, क्यों उदास तुम रहती हो?
पहले तो थी भरपूर मगर, अब हौले-हौले बहती हो!!

''जल जीवन-आधार है''

जल-जीवन-आधार है, जल जीवन का मूल।
अर्थहीन जल-बिन जगत, कभी न इसको भूल।।

जल का संरक्षण बने, सदा मनुज का धर्म।
हो जल में ही केंद्रित, जीवन का हर कर्म।।

ठोस, तरल और गैस हैं, जल के तीनों रूप।
परमब्रह्म जल को समझ, जल जगती का भूप।।

जल से ही सब तीर्थ हैं, जल से ही भगवान।
जल के रहते जगत हैं, जल-बिन सब बेजान।।

वर्षा-जल पावन सदा, धरती का श्रृंगार।
बिन जल जलती है धरा, होता हा-हा कार।।

संपर्क करें:
डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा ''अरुण''
सदस्य, कार्य परिषद,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
74/3, न्यू नेहरू नगर, रूड़की-247 667
मो.9412070351

पंजीयन संख्या : UTTHIN/2012/46793

अभिकल्पित एवं मुद्रित : पैरामाउण्ट ऑफसैट प्रिंटर्स,